५. भाषा का प्रश्न

(पूरक पठन)

– महादेवी वर्मा

भाषा मानव की सबसे रहस्यमय तथा मौलिक उपलब्धि है । वैसे बाह्य जगत भी ध्वनिसंकुल है तथा मानस जगत को भी अपने सुखद-दुखद जीवन स्थितियों को व्यक्त करने के लिए कंठ और स्वर प्राप्त हैं ।

चेतन ही नहीं, जड़ प्रकृति के गत्यात्मक परिवर्तन भी ध्वनि द्‌वारा अपना परिचय देते हैं । वज्रपात से लेकर फूल के खिलने तक ध्वनि के जितने कठिन-कोमल आरोह-अवरोह हैं, निदाघ के हरहराते बवंडर से लेकर वासंती पुलक तक लय की विविधतामयी मूर्च्छना है, उसे कौन नहीं जानता । पशु-पक्षी जगत के सम-विषम स्वरों की संख्यातीत गीतिमालाओं से भी हम परिचित हैं परंतु ध्वनियों के इस संघात को हम भाषा की संज्ञा नहीं देते, क्योंकि इसमें वह अर्थवत्ता नहीं रहती जो हृदय और बुद्‌धि को समान रूप से तृप्ति तथा बोध दे सके ।

मानव कंठ को परिवेश विशेष में जीवनाभिव्यक्ति के लिए जो ध्वनियाँ दायभाग में प्राप्त हुई थीं, उन्हें उसके अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा से सर्वथा नवीन रूपों में अवतरित किया । उसने अपनी जीवनाभिव्यक्ति ही नहीं, उसके विस्तृत विविध परिवेश को भी ऐसे शब्द संकेतों में परिवर्तित कर लिया, जो विशेष ध्वनि मात्र से किसी वस्तु को ही नहीं, अशरीरी भाव और बोध को भी रूपायित कर सके और तब उस वाणी के द्‌वारा उसने अपने रागात्मक संस्कार तथा बौद्‌धिक उपलब्धियों को इस प्रकार संग्रंथित किया कि वे प्रकृति तथा जीवन के क्षण-क्षण परिवर्तित रूपों को मानव चेतना में अक्षर निरंतरता देने को रहस्यमयी क्षमता पा सके ।

मनुष्य की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति में सबसे अधिक समर्थ और अक्षर भाषा ही होती है । वही मानव के आंतरिक तथा बाह्य जीवन के परिष्कार का आधार है, क्योंकि बौद्‌धिक क्रिया तथा मनोरागों की अभिव्यक्ति तथा उनके परस्पर संबंधों को संग्रथित करने में भाषा एक स्निग्ध किंतु अटूट सूत्र का कार्य करती है । भाषा में स्वर, अर्थ, रूप, भाव तथा बोध का ऐसा समन्वय रहता है, जो मानवीय अभिव्यक्ति को व्यष्टि से समष्टि तक विस्तार देने में समर्थ है ।

मानव व्यक्तित्व के समान ही उसकी वाणी का निर्माण दोहरा होता है । जैसे मनुष्य का व्यक्तित्व बाह्य परिवेश के साथ उसके अंतर्जगत के घात-प्रतिघात, अनुकूलता-प्रतिकूलता, समन्वय आदि विविध परिस्थितियों द्‌वारा निर्मित होता चलता है, उसी प्रकार उसकी भाषा असंख्य

परिचय

जन्म : १९०७, फर्रूखाबाद (उ.प्र)
मृत्यु : १९८७, इलाहाबाद (उ.प्र)
परिचय : महादेवी वर्मा जी छायावादी कवियों में प्रमुख स्थान रखती हैं । आपकी रचनाओं में पीड़ा, दर्द, रहस्यवाद, प्रकृति चित्रण यत्र-तत्र, सर्वत्र दिखाई पड़ते हैं । आपने गद्‌य-पद्‌य दोनों विधाओं में समर्थ लेखन किया है ।
प्रमुख कृतियाँ : 'ठाकुर जी भोले हैं', 'आज खरीदेंगे हम ज्वाला' (बाल कविता संकलन), 'स्मृति की रेखाएँ', 'मेरा परिवार' 'अतीत के चलचित्र' (रेखाचित्र), 'यामा', 'रश्मि', 'नीहार', 'सांध्यगीत' 'दीपाशिखा', 'सप्तपर्णा' (कविता संग्रह) आदि ।

गद्‌य संबंधी

प्रस्तुत भाषण में लेखिका ने भाषा के महत्त्व को स्थापित करते हुए इसे आलोक की दीपशिखा बताया है । भाषा के अभाव में विकास के सारे मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं । भाषा के माध्यम से ही व्यावहारिक जीवन का लेन-देन सहज एवं सुकर बन पाता है । महादेवी जी का मानना है कि विविध भाषाओं ने अपने देश को समृद्‌धशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।

जटिल-सरल, अंतर-बाह्य प्रभावों में गल-ढलकर परिणति पाती है । कालांतर में हमारा समग्र अंतर्जगत, हमारी संपूर्ण बौद्धिक तथा रागात्मक सत्ता शब्द संकेतों से इस प्रकार संग्रंथित हो जाती है कि एक शब्द संकेत अनेक अप्रस्तुत मनोराग जगा देने की शक्ति पा जाता है ।

भाषा सीखना तथा भाषा जीना एक-दूसरे से भिन्न हैं तो आश्चर्य की बात नहीं । प्रत्येक भाषा अपने ज्ञान और भाव की समृद्धि के कारण ग्रहण करने योग्य है, परंतु समग्र बौद्धिक तथा रागात्मक सत्ता के साथ जीना अपनी सांस्कृतिक भाषा के संदर्भ में ही सत्य है । कारण स्पष्ट हैं । ध्वनि का ज्ञान आत्मानुभव से तथा अर्थ का बुद्धि से प्राप्त होता है । शैशव में शब्द हमारे लिए ध्वनि संकेत मात्र होते हैं । यदि हम ध्वनि पहचानने से पहले उसके अर्थ से परिचित हो जावें तो हम संभवतः बोलना न सीख सकें ।

अतः यह कहना सत्य है कि वाणी आत्मानुभूति की मौलिक अभिव्यक्ति है, जो समष्टिभाव से अपने विस्तार के लिए भाषा का रूप धारण करती है । इसीलिए पाणिनि ने कहा हैः-''आत्मा बुद्धया समेत्यार्थान् मनोयुक्त विवक्षया ।'' अर्थात बुद्धि के द्वारा सब अर्थों का आकलन करके मन में बोलने की इच्छा उत्पन्न करती है ।

मानव व्यक्तित्व जैसे प्राकृतिक परिवेश से प्रभावित होता है, उसी प्रकार उसकी भाषा भी अपनी धरती से प्रभाव ग्रहण करती है और यह प्रभाव भिन्नता का कारण हो जाता है । भाषा संबंधी बाह्य भिन्नताएँ पर्वत की ऊँची-नीची अनमिल श्रेणियाँ न होकर एक ही सागरतल पर बनने वाली लहरों से समानता रखती हैं । उनकी भिन्नता समष्टि की गति की निरंतरता बनाए रखने का लक्ष्य रखती है, उसे खंडित करने का नहीं ।

प्रत्येक भाषा ऐसी त्रिवेणी है, जिसकी एक धारा व्यावहारिक जीवन के आदान-प्रदान सहज करती है, दूसरी मानव की बुद्धि और हृदय की समृद्धि को अन्य मानवों के बुद्धि तथा हृदय के लिए संप्रेषणशील बनाती है और तीसरी अंतःसलिला के समान किसी भेदातीत स्थिति की संयोजिका है ।

हमारे विशाल देश की रूपात्मक विविधता उसकी सांस्कृतिक एकता की पूरक रही है, उसकी विरोधिनी नहीं । इसी से विशेष जीवन पद्धति चिंतन, रागात्मक दृष्टि, सौंदर्य बोध आदि के संबध में तत्त्वगत एकता ने देश के व्यक्तित्व को इतने विघटनधर्मा विवर्तनों में भी संश्लिष्ट रखा है ।

धरती का कोई खंड, नदी, पर्वत, समतल आदि का संघात कहा जा सकता है । मनुष्यों की आकस्मिक रूप से एकत्र भीड़ मानव समूह की संज्ञा पा सकती है । राष्ट्र की गरिमा पाने के लिए भूमिखंड विशेष की ही नहीं, एक सांस्कृतिक दायभाग के अधिकारी और प्रबुद्ध मानव समाज की भी आवश्यकता होती है, जो अपने अनुराग की दीप्ति से उस भूमिखंड के हर कण

संभाषणीय

'भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है' इसपर चर्चा कीजिए ।

लेखनीय

'बुरी संगति किसी को भी दिशाहीन बना सकती है' इसपर तर्क सहित अपने विचार लिखिए ।

को इस प्रकार उद्‌भासित कर दे कि वह एक चिर नवीन सौंदर्य में जीवित और लयवान हो सके।

कहने की आवश्यकता नहीं कि हिमकिरीटिनी भारत भूमि ऐसी ही राष्ट्र प्रतिमा है । ऐसे महादेश में अनेक भाषाओं की स्थिति स्वाभाविक है, किंतु उनमें से प्रत्येक भाषा एक वीणा के ऐसे सधे तार के समान रहकर ही सार्थकता पाती है, जो रागिनी की संपूर्णता के लिए ही अपनी झंकार में अन्य तारों से भिन्न है ।

सभी भारतीय भाषाओं ने अपनी चिंतना तथा भावना की उपलब्धियों से राष्ट्र जीवन को समृद्ध किया है । उनकी देशगत भिन्नता, उनकी तत्त्वगत एकता से प्राणवती होने के कारण महार्घ है ।

ज्वाला धरती की गहराई में कोयले को हीरा बनाने की क्रिया में संलग्न रहती है, और सीप जल की अतल गहनता में स्वाति की बूँद से मोती बनाने की साधना करती है । न हीरक धरती की ज्वाला को साथ लाता है, न मुक्ता जल की गहराई को, परंतु वे समान रूप से मूल्यवान रहेंगे ।

हम जिस संक्रांति के युग का अतिक्रमण कर रहे हैं, उसमें मानव जीवन की त्रासदी का कारण संवेदनशीलता का आधिक्य न होकर उसका अभाव है । हमारी राजनीतिक स्वतंत्रता के साथ हमारी मानसिक परतंत्रता का ऐसा ग्रंथि बंधन हुआ है, जिसे न हम खोल पाते हैं, न काट पाते हैं । परिणामतः हमारे विकास के मार्ग को हमारी छाया ही अवरुद्ध कर रही है।

अतीत में हमारे देश ने अनेक अंधकार के आयाम पार किए हैं, परंतु इसके चिंतकों, साधकों तथा साहित्य सृष्टाओं की दृष्टि के आलोक ने ही पथ की सीमाओं को उज्ज्वल रखकर उसे अंधकार में खोने से बचाया है।

भाषा ही इस आलोक के लिए संचारिणी दीपशिखा रही है ।

पावका नः सरस्वती ।

('संभाषण' भाषण संग्रह से)

—— ० ——

अपनी भाषा को समृद्ध करने के लिए दूरदर्शन पर आने वाले शैक्षिक कार्यक्रमों को देखिए तथा आकलन सहित सुनिए ।

हरिशंकर परसाई जी का 'टॉर्च बेचने वाले' हास्य-व्यंग्य निबंध पढ़िए और इसकी प्रमुख बातें लिखिए ।

शब्द संसार

गत्यात्मक वि.(सं.) = गतिशील
निदाघ पुं.सं.(सं.) = गरमी, ग्रीष्म ऋतु
मूर्च्छना स्त्री.सं.(सं.) = मूर्च्छा
दायभाग पुं.सं.(सं.) = पैतृक धन, संपत्ति को उत्तराधिकारी में बाँटने की व्यवस्था
विवर्तन पुं.सं.(सं.) = घूमना, चक्कर
संश्लिष्ट वि.(सं.) = संश्लेषित (जोड़ना, मिलाना)
प्रबुद्ध वि.(सं.) = जागा हुआ, ज्ञानी
उद्‌भासित वि.(सं.) = प्रकाशित, सुशोभित, चमकता हुआ

* सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-

(१) कारण लिखिए :

ध्वनियों के संघात को भाषा की संज्ञा नहीं दे सकते ।

१. २.

भाषा ग्रहण करने योग्य है

१. २.

(२) संजाल पूर्ण कीजिए :

देश की एकता बनाए रखने वाले घटक

(३) कृति कीजिए :

अभिव्यक्ति को
एक व्यक्ति से
समाज तक पहुँचाने
वाले घटक

------

(४) लिखिए :

१. भाषा के कार्य
१. -------
२. -------

२. राष्ट्र को गरिमा प्रदान करने वाले घटक
१. -------
२. -------

(५) पाठ में प्रयुक्त विलोम शब्दों की जोड़ियाँ ढूँढ़कर लिखिए :

विलोम शब्द जोड़ियाँ			
—— × ——	—— × ——	—— × ——	—— × ——
—— × ——	—— × ——	—— × ——	—— × ——
—— × ——	—— × ——	—— × ——	—— × ——
—— × ——	—— × ——	—— × ——	—— × ——

अभिव्यक्ति ‘भाषा सेतु का काम करती है’, इसपर अपने विचार लिखिए ।

भाषा बिंदु

(१) निम्नलिखित वाक्यों में आए अव्ययों को रेखांकित कीजिए और कोष्ठक में उनके भेद लिखिए :

१. लड़का मेरे पास बैठा और धीरे-धीरे बातें करने लगा । (.............), (.............)

२. 'अरे पुत्तर !' बूढ़ा इतना ही बोल पाया कि उर्मि का मोबाइल बज उठा । (.............), (.............)

३. थोड़ी-सी छानबीन से पता चला कि कोलकाता और बनारस में बहुत दूरी नहीं है । (.............), (.............)

४. ''ओह नहीं मल्लिका ! कभी बैठे-बैठे मन उदास हो जाता है ।'' (.............), (.............)

(२) पाठ में प्रयुक्त अव्यय छाँटिए और उनका अपने वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

- क्रियाविशेषण अव्यय
  १. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------
  ----
- संबंधसूचक अव्यय
  १. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------
  ----
- समुच्चयबोधक अव्यय
  १. ---------- २. ---------- वाक्य = ----------------------------
  ----
- विस्मयादिबोधक अव्यय
  १. ---------- २. ----------वाक्य = ----------------------------
  ----

(३) नीचे आकृति में दिए हुए अव्ययों के भेद पहचानकर उनका अर्थपूर्ण स्वतंत्र वाक्यों में प्रयोग कीजिए :

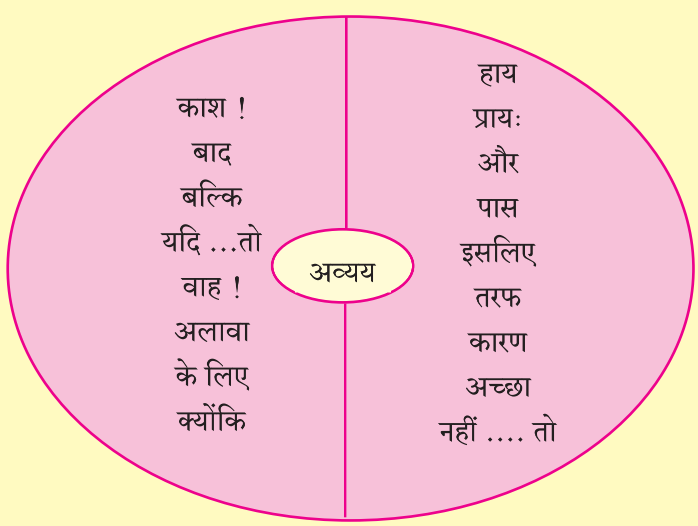

उपयोजित लेखन

'जैसी करनी वैसी भरनी' इस कहावत के आधार पर कहानी लिखिए ।